जिनको यश हंसा, जगत प्रशंसा, सुनिजन मानस रंता।
लोचन अनुरूपिनि, श्यामसरूपिनि, अंजन अंजित संता।।
कालत्रयदरशी, निर्गुण परशी, होत बिलम्ब न लागै।
तिनके गुण कहिहौं, सब सुख लहिहौं, पाप पुरातन भागै।।20।।

शब्दार्थ–हंसा = (1) हंस (2) मन। मानस = (1) मानसरोवर (2) हृदय। अनुरूपिनि = अनुरूप। श्यामसरूपिनि = (1) काला रंग (2) श्याम वर्ण वाले। संता = साधुजन। कालत्रयदरशी = त्रिकालज्ञ, तीनों कालों की बातें जानने वाले। निर्गुण परशी = निर्गुण ब्रह्म का स्पर्श अर्थात् सामीप्य प्राप्त कर लेने वाले। पुरातन = प्राचीन, जन्म-जन्मान्तर के।

प्रसंग–इन पंक्तियों में केशव राम के गुण-गान करने की प्रतिज्ञा करते हैं।

व्याख्या—जिनके यश-रूपी हंस की समस्त जगत् प्रशंसा करता है और जो मुनियों के मन-रूपी मानसरोवर को प्रेम से परिपूर्ण बनाये रखता है; जिनके श्यामवर्ण के श्यामरूप अंजन को अपनी आँखों में लगाकर मुनि त्रिकालज्ञ और निर्गुण ब्रह्म का सामीप्य शीघ्र ही प्राप्त कर लेते हैं; अर्थात् जिनकी रूप-छवि का ध्यान करते ही मुनियों को इतना ज्ञान हो जाता है कि वे तीनों कालों की बातों से परिचित हो जाते हैं और सायुज्य मुक्ति को प्राप्त कर लेते हैं; मैं ऐसे ही राम के गुणों का गान करके अपने जन्म-जन्मातर के पापों से छुटकारा पाकर सुख प्राप्त करूँगा।

विशेष—'होत बिलम्ब न लागै' पद से राम की शक्ति और भक्त वत्सलता ध्वनित होती है।

अलंकार—रूपक, श्लेष।